लई चरण ने भेल्या नेणां, वाले जोयूं विचारी चित रे।
वटकी चरण ने लीधां वेगलां, जाणी इंद्रावती रामत रे।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी ने चरण को उठाकर नैनों से लगा लिया। वालाजी ने चित्त में यह विचार कर कि श्री इन्द्रावतीजी की यह रामत है, ऐसा जानकर अपने चरण को झटके से वापस खींच लिया।

वाले वेगे लीधी कंठ बांहोंडी, बेठा अंग भीडीने हेतमां रे।
नेह थयो घणो नेंणांसुं, दिए नेत्रने चुमन खांतमां रे।। ९ ।।

वालाजी ने तुरन्त गले में हाथ डालकर प्यार से चिपका लिया। श्री इन्द्रावतीजी के नैनों से बड़ा प्यार हो गया और आंखों को चूम लिया।

रंग रेल करी रस बस थया, सखी स्याम घणां अमृतमां रे।
लथबथ थई कलोल थया, ए तो कूपी रह्या बेहू चितमां रे।। १० ।।

आनन्द के रस में दोनों सराबोर (डूब गए) हो गए। अमृतमय आनन्द में विभोर होकर दोनों एकाकार हो गए।

कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, वाले सुख दीधां घणां घणां रे।
नवलो नेह वधारयो रमतां, गुण किहां कहूं वालातणा रे।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, प्यारे सुन्दरसाथजी! वालाजी ने इस तरह बहुत घने सुख दिए। उनके गुणों की महिमा कहां तक गाऊं? वह नए-नए ढंग से खेलते-खेलते खेल में प्रेम बढ़ाते हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ ७३२ ॥

राग केदारो

बलियामां दीसे बल, अंग आछो निरमल।
नेंणां कटाछे वल, पांपण चलवे पल, अजब अख्यात।। १ ।।

वालाजी में बड़ा उत्साह है। उनका शरीर बहुत अच्छा है, नेत्र तिरछे हैं, पलकें चलाते हैं, ऐसी अजब शोभा है।

जनम संघाती जाण्यो, मन तो ऊपर माण्यो।
सुंदरी चितसुं आण्यो, विविध पेर वखाण्यो, वालानी विख्यात।। २ ।।

वालाजी जन्म के साथी हैं। यह हमने मन से मान लिया है। हे सखियो! हमने तरह-तरह से वालाजी के गुणों का बखान किया, जिसे तुम चित्त में धारण करो।

वालोजी वसेके हित, चालतो ऊपर चित।
इछा मन जे इछत, खरी साथनी पूरे खंत, भलो भली भांत।। ३ ।।

वालाजी विशेषकर हमारे हितकारी हैं। चित्त के ऊपर चलते हैं। मन की इच्छा बड़ी चाह के साथ पूरी करते हैं।

इंद्रावती कहे खरूं, मूलनो संघाती वरूं।
ए धन रुदयामां धरूं, अंगथी अलगो न करूं, खरी मूने खांत।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी सत्य कहती हैं कि मूल के सम्बन्ध से मैं इन्हें पति बना लूं। इस अमूल्य निधि (न्यामत) को हृदय में धारण करूं। अपने से कभी जुदा न करूं, ऐसी मेरी चाह है।

Nijanand App

वरजीने दऊं वीड, भीडतां न करूं जीड।
अंग मांहें हुती पीड, काम केरी भाजूं भीड, जो जो मारी वात।। ५ ।।

वालाजी से जोर से मिलूं। मिलने में देर न करूं। हमारे अंग में (मिलन की) पीड़ा थी। काम की पीड़ा शान्त करने की इच्छा पूरी करूं। ऐसी हमारी बात को देखो।

बांहोंडी कंठमां घाली, एकी गमा लीधो टाली।
लई चाली अणियाली, सखी मुख हाथ ताली, जोई रह्यो साथ।। ६ ।।

उनके गले में हाथ डालकर एक ओर इशारे के साथ एकान्त में खींचकर ले गई और सब सखियां आश्चर्य की दृष्टि से देखती रह गईं।

रामत करती रंगे, चुमन देवंती वंगे।
उमंग आवियो संगे, भेली मुख भीडे अंगे, मूके नहीं बाथ।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के साथ आनन्द से खेलती हैं। फुदक-फुदक कर चुम्बन देती हैं। उमंग में आकर मुख से मुख मिलाती हैं और आलिंगन (जफ्फी कोहली, गोदी में लिपटना) नहीं छूटता।

रंगना करती रोल, झीलती मांहें झकोल।
करी मुख चकचोल, जोरावर झलाबोल, लेवा न दे स्वांस।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी लीला में बड़े आनन्द के साथ शोर मचा रही हैं। झपटा-झपटी में आनन्द ले रही हैं। चंचल मुख से जोरदार शब्द बोलती हैं और अपनी रामत में वालाजी को दम भी नहीं लेने देती।

पिउना अधुर पिए, अमृत घूंटडे लिए।
सामा वली पोते दिए, देवंता मुख नव विहे, अंग प्रेम वास।। ९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के अधरामृत के घूंट पीती हैं और वालाजी को पिलाती हैं। अंग में भरे हुए प्रेम से मुख में मुख देने में पीछे नहीं हटतीं।

वली इछा जुई धरे, फुंदडी फेरसूं फरे।
जोर अति घणो करे, इंद्रावती काम सरे, रमे पिउ रास।। १० ।।

फिर दूसरी इच्छा करती हैं। फूंदड़ी (चकरी, कीकली) फिर से घूमती हैं, जिसमें ताकत अधिक लगाती हैं। इस तरह से वालाजी और इन्द्रावतीजी रास रमती हैं। इसमें श्री इन्द्रावतीजी की इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं।

फुंदडी मेलीने हाथ, चटकासूं घाली बाथ।
रामत करे निघात, कंठ बांहोंडी फरे साथ, रंगे प्राणनाथ।। ११ ।।

फूंदड़ी (चकरी, कीकली) से हाथ छुड़ाकर फुर्ती से कोहली (अंक) भरती हैं। निडर होकर वालाजी के गले में हाथ डालकर खेलती हैं।

वली लिए हाथ ताली, फरती देवंती वाली।
बेठंती उठंती वाली, रामत वचे रसाली, विविध विलास।। १२ ।।

फिर से हाथ की ताली लेने देने वाली, उठने-बैठने वाली अनेक प्रकार से रसमयी रामतें खेलती हैं।

Nijanand App

छटके रामत मेली, वालाजी संघाते गेहेली।
आलिंघण लिए नेली, चुमन दिए पिउ पेहेली, मुख आस पास।। १३ ।।

दीवानी श्री इन्द्रावतीजी खेल में वालाजी को छोड़ती हैं, फिर मिलती हैं, कोली भर लेती हैं, फिर छोड़ देती हैं। पहले चुम्बन देती हैं, फिर प्रियतम के मुख को इधर-उधर से चूमती हैं।

सर्वे जोवंता सुंदरी, रामत तो घणी करी।
पिउ कंठे बांहो धरी, इंद्रावती वाले वरी, जोइए कोण मुकावे हाथ।। १४ ।।

सब सखियों के देखते हुए भी श्री इन्द्रावतीजी ने बहुत रामतें कीं। वह वालाजी के गले में हाथ डालकर कहती हैं कि मैंने वालाजी को अपना बना लिया है। देखती हूं अब कौन सखी हमारा हाथ छुड़ाती है?

॥ प्रकरण ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ ७४६ ॥

केसरबाईनो झगडो

आवी केसरबाई कहे रे बेहेनी, सुणो वात कहूं तमसूं।
भली रामत वालासूं रंगे करी, हवे मूको रमे अमसूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के (प्रेम भरे अधिकार) की बात को सुनकर केसरबाई सखी आकर कहती है, हे बहन! तुमसे एक बात कहती हूं। तुमने बहुत रंगभरी रामतें वालाजी के साथ की हैं। अब वालाजी को छोड़ो, मैं खेलूंगी।

हूं तो नहीं रे मूकूं मारो नाहोजी, तमे जोर करो जथाबल।
आवी वलगो वालाजीने हाथ, आतां देखे छे सैयर साथ।। २ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं अपने वालाजी को नहीं छोड़ूंगी। तुम अपनी शक्ति आजमा लो। वालाजी को जरा हाथ तो लगाओ। सब सखियां देख रही हैं।

इंद्रावती कहे अमसूं रमतां, केसरबाई करो एम कांए।
तमे हाथ आवी वालाजीने वलगो, पण हूं नव मूकूं बांहें।। ३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे केसरबाई! मेरे रस में तुम ऐसे क्यों विघ्न करती हो। तुम आकर वालाजी के हाथ को पकड़ो, लेकिन मैं इनकी बांहें नहीं छोड़ूंगी।

हूं कंठ बांहोंडी वालीने ऊभी, मारो प्राणतणो ए नाथ।
नेहेचे सखी हूं नही रे मूकूं, तमे कां करो वलगती वात।। ४ ।।

मैं वालाजी के गले में हाथ डाले खड़ी हूं। यह मेरे प्राणनाथ हैं। यह निश्चित है कि मैं नहीं छोड़ूंगी। तुम व्यर्थ में क्यों झगड़ती हो?

अनेक प्रकार करो रे बेहेनी, हूं नहीं मूकूं प्राणनो नाथ।
बीजी रामत जई करो रे बेहेनी, आतां ऊभो छे एवडो साथ।। ५ ।।

हे केसरबाई! तुम कुछ भी कर लो मैं अपने प्राणनाथ को नहीं छोड़ूंगी। तुम जाकर और खेल खेलो। यह सब सुन्दरसाथ खड़े हैं। (इनमें से किसी के साथ खेल लो)।

केम रे मूकूं कहे केसरबाई, तमने रमतां थई घणी वार।
हवे तमे केम नहीं मूको, मारा प्राणतणो आधार।। ६ ।।

केसरबाई कहती हैं, भला कैसे नहीं छोड़ोगी? तुम्हें वालाजी के साथ खेलते हुए बहुत देर हो गई है। अब तुम हमारे प्राणवल्लभ को भला क्यों नहीं छोड़ोगी?

Nijanand App